धर्म साहित्य के विविध आयामों की प्रासंगिकता

संपादक

डॉ. हर्षलता शाह

डॉ. सरोज सिंह

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

Book Details

Book Name	:	धर्म साहित्य के विविध आयामों की प्रासंगिकता
Editors	:	Dr. Harshalata Shah Dr. Saroj Singh
Edition	:	2019
Pages	:	154
Book Size	:	Crown
Price	:	Rs. 300/-
Printed By	:	Today Graphics 192 Bells Road Chepauk Chennai-5
Publisher	:	Today Publisher 192 Bells Road Chepauk Chennai-5
ISSN	:	2394-4277

Scanned by CamScanner

32	हिन्दी भाषा के साहित्य में जैन धर्म की कथाओं की प्रासंगिकता -जी. नीलावती	123
33	तमिल कवि कण्णदासन के भगवान 'ईसा मसीहा' के काव्य की प्रासंगिकता -के. कविता	126
34	महाकाव्यों की रचना में भारतीय साहित्यकारों का योगदान -गुड़िया चौधरी	129
35	वीरेंद्र जैन के उपन्यास में चित्रित धार्मिक प्रासंगिकता -एस. राजलक्ष्मी	131
36	मानवीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस की प्रासंगिकता -विनीता सिंह	133
37	जैन धर्म के पच्चीस बोल के 19वे बोल के ध्यान की प्रासंगिकता - शर्वी श्रेयांस भंसाली एवं डिम्पल एस. जैन बी.एस.सी. मनोविज्ञान, द्वितीय वर्ष (छात्राएँ)	137
38	मुस्लिम धर्म के संदर्भ में -हतीज़त नूरिया, विज़ुवल कम्युनिकेशन, द्वितीय वर्ष (छात्रा)	140
39	'ईसाई धर्म के संदर्भ में' -प्रतीशा के, बी.एस.सी. मनोविज्ञान, द्वितीय वर्ष (छात्रा)	142

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner

वीरेंद्र जैन के उपन्यास में चित्रित धार्मिक प्रासंगिकता

एस. राजलक्ष्मी
सहायक प्राध्यापिका
लोयोला महाविद्यालय

मनुष्य के कर्मों को ही धर्म माना गया है कर्म के अनुसार समाज के लोगों का वर्गीकरण किया गया, जिससे समाज का संचालन एक व्यवस्थित रूप से हो। बदलती परिस्थितियों के अनुसार धर्म व्यक्तिगत सामाजिक प्रतिष्ठा का रूप धारण कर लिया है। परिणाम स्वरूप धर्म का परंपरागत रीति लुप्त हो गया उसके स्थान पर रूढ़िवादिता अंधविश्वास आदि का जन्म हुआ।

आधुनिक युग में आर्थिक बल पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों के द्वारा समाज के निर्बलों पर अत्याचार होते हुए देखा जा सकता है और अंधविश्वास के नाम पर उनका शोषण किया जाता है। वीरेंद्र जैन ने अपने उपन्यासों में इन समस्याओं और अंधविश्वासों का चित्रण कर हमें सचेत किया है कि धार्मिक वर्गीकरण की ढांचा हमें अपने समूह के साथ मिलकर विकास होना है ना बल्कि अनिती करके एक-दूसरे को पीछे धकेल कर आगे निकलने की कोशिश करना है।

अंग्रेजी शासन के पूर्व ही धार्मिक कुरितीयों प्रचलित थी ही, अंग्रेजों ने इसका फायदा उठाया। हमारे देश में हिंदुओं और मुसलमानों के मध्य जो सौहोर्य भाव को स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति के द्वारा नष्ट किए। अंग्रेजी सरकार धर्म के नाम पर दोनों धर्मावलंबियों को उकसाया जिसके परिणाम स्वरूप दंगे, मार-पीट भी होने लगी। डूब उपन्यास में इस का उल्लेख किया है। "इस गांव में दो-तीन मुसलमान भी घटिया ऊपर रहते थे उन्हीं के बीचों-बीच रघु साव का मकान है । आजादी की लहर में जब यह सुना की मुसलमानों के रहते आजादी का कोई अर्थ नहीं तब उन्हें भी मार डाला गया।"*१

दूसरे धर्म कि सिद्धांतों और विचारों को मान्यता देना श्रेष्ठ बात है क्योंकि दूसरे धर्म के सिद्धांतों को और विचारों का आत्मसात करने से हम और भी परिपक्व हो सकते हैं। पर कुछ लोग इसे मानते नहीं हैं इसका भी उदाहरण वीरेंद्र जैन ने अपने डूब उपन्यास में किया। मोदी साव पथरा बब्बा का नमन करते हैं। उस पर गांव के लोग के द्वारा पंचायत बुलाया जाता है और मोदी साहबको अपने धर्म से अलग कर देते हैं। "लेकिन हमें इसका कोई सरोकार नहीं होती हमने तो यह तय किया कि अब तुम्हें दिगंबर जैन नहीं मानेंगे। तुम दिगंबर आत्म नाथ की विधि विधान से देव आराधना नहीं कर सकते। हमने तुम्हारे लिए दूसरे दालान में एक वेदी रख दी है। सो तुम उसमें वस्त्र पहनकर प्रतिमा की प्रतिष्ठा कर लो जैसे चाहो उस की पूजा-अर्चना करो।"*२

समाज के लोगों के विश्वास ही रूढ़ बन गये हैं। हरिजनों को छूना, उनके घर जाना, उनके द्वारा उपयोग किए हुए कुएं का पानी लेना, उनकी गली में प्रवेश करना भी पाप माना जाता था और गांव में उन लोगों को सभी से सुदूर रहना पड़ता है। यह रूढ़ीवादी विश्वास कई सालों से चली आ रही है। मनुष्यता लुप्त हो गई है। गलै और गन उपन्यास में लेखक ने इसका

Scanned with CamScanner

Scanned by CamScanner